अयोध्या लौटते समय भरत और शत्रुघ्न नगर के द्वार पर रुक गए । वहां ना तो किसी प्रकार का संगीत था और ना ही कोई स्वागत करने के लिए खड़ा था । किसी दुर्भाग्य की आशंका से ग्रस्त दोनों महल की ओर दौड़े। भरत राजा दशरथ के कक्ष में घुसे लेकिन वह कक्ष तो खाली था । चिंतित होकर कैकई के कक्ष में पहुंचे । अपनी माता को देख कर वे बहुत प्रसन्न हुए और अपने पिता तथा भाई राम के बारे में पूछने लगे । कैकई ने उसके प्रश्न डालने का प्रयास किया लेकिन उनकी बेचैनी देखकर उसे बताना पड़ा कि दशरथ की मृत्यु हो चुकी है और राम वनवास में है । अब भारत को राजाaबनना था । जब भरत को पूरी कहानी मालूम चली तो बे बहुत गुस्सा हुए। उन्होंने माता के कई से कह दिया कि राजा बनने का अधिकार राम का ही है । भरत माता कौशल्या के पैरों पर गिर पड़े और माता के कई के कृत्य के लिए क्षमा मांगने लगे । इसके बाद भरत ने अपने पिता का अंतिम संस्कार किया और राम को वापस लाने की तैयारी में जुट गए ।